GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

मैथिलीशरण गुप्त की 'साकेत' में नारी-पात्रों का चित्रण: उर्मिला के विशेष संदर्भ में

डॉ. श्याम शंकर राय
सहायक प्राध्यापक
जे.पी.एस.पी.एम. समस्तीपुर, बिहार

शोध-सार

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) का महाकाव्य 'साकेत' रामकथा का ऐसा पुनर्पाठ है जिसमें कथा का भावनात्मक केन्द्र राम से हटकर अयोध्या के अन्तःपुर की स्त्रियों की ओर खिसकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य 'साकेत' के प्रमुख नारी-पात्रों—सीता, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, माण्डवी-श्रुतकीर्ति और विशेषतः उर्मिला—के चित्रण का विश्लेषण करना है। अध्ययन गुणात्मक, विवरणात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें मूल पाठ को प्राथमिक स्रोत तथा आलोचनात्मक एवं सैद्धान्तिक ग्रन्थों को द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया गया है। निष्कर्षतः गुप्त ने परम्परा में उपेक्षित उर्मिला को त्याग, प्रेम और आत्मबल की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया और कैकेयी जैसे पात्र को मानवीय संवेदना के साथ पुनः प्रस्तुत किया। साथ ही, समकालीन नारी-विमर्श की दृष्टि से यह चित्रण आदर्शीकरण और त्याग-केन्द्रित स्त्री-छवि की सीमाओं से भी मुक्त नहीं है।

कुंजी शब्द: मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, उर्मिला, नारी-पात्र, नारी-विमर्श, रामकथा, विरह

1. प्रस्तावना

हिन्दी के राष्ट्रकवि के रूप में प्रतिष्ठित मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के उन प्रमुख कवियों में हैं जिन्होंने खड़ी बोली को काव्य-भाषा के रूप में स्थापित करने में निर्णायक योगदान दिया (शुक्ल, 1929; नगेन्द्र, 1973)। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गौरव और नैतिक

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

आदर्शों के साथ-साथ स्त्री-जीवन के प्रति विशेष संवेदनशीलता दिखाई देती है। 'यशोधरा' (1932) में बुद्ध की उपेक्षित पत्नी का पक्ष और 'साकेत' (1932) में उर्मिला का पक्ष इसी दृष्टि के उदाहरण हैं (गुप्त, 1932a, 1932b)।

'साकेत' का रचना-बीज महावीर प्रसाद द्विवेदी के उस प्रसिद्ध निबन्ध में माना जाता है जिसमें उन्होंने कवियों द्वारा उर्मिला की उपेक्षा पर प्रश्न उठाया था (द्विवेदी, 1908)। इस प्रकार 'साकेत' केवल रामकथा का पुनःकथन नहीं, बल्कि साहित्यिक परम्परा में छूट गए स्त्री-स्वर को स्थान देने का सचेत प्रयास भी है।

2. शोध की आवश्यकता और औचित्य

रामकथा पर आधारित अधिकांश काव्य राम-केन्द्रित रहे हैं और उनमें स्त्री-पात्र प्रायः सहायक भूमिका में दिखते हैं। 'साकेत' में स्त्री-पात्रों को अपेक्षाकृत अधिक स्थान और आन्तरिक जीवन मिला है। यद्यपि उर्मिला और 'साकेत' पर पर्याप्त आलोचनात्मक सामग्री उपलब्ध है, फिर भी सभी प्रमुख नारी-पात्रों को एक साथ रखकर उनके तुलनात्मक चित्रण और समकालीन नारी-विमर्श की कसौटी पर परीक्षण का प्रयास सीमित दिखाई देता है। यह अध्ययन इसी अन्तराल को भरने की दिशा में एक प्रयास है।

3. शोध के उद्देश्य

- 'साकेत' में चित्रित प्रमुख नारी-पात्रों की भूमिका एवं चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करना।
- उर्मिला के चरित्र—प्रेम, त्याग, विरह और आत्मबल—का विशेष विश्लेषण करना।
- वाल्मीकि और तुलसीदास की परम्परा से तुलना करते हुए गुप्त की मौलिक दृष्टि को रेखांकित करना।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

- समकालीन नारी-विमर्श की दृष्टि से इस चित्रण की उपलब्धियों और सीमाओं का मूल्यांकन करना।

4. शोध-पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है और इसमें विवरणात्मक-विश्लेषणात्मक तथा पाठ-विश्लेषण (textual analysis) पद्धति अपनाई गई है। प्राथमिक स्रोत के रूप में 'साकेत' का मूल पाठ लिया गया है। द्वितीयक स्रोतों में हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ, स्त्री-प्रश्न पर महादेवी वर्मा का चिन्तन तथा नारीवादी और औपनिवेशिक-राष्ट्रवादी विमर्श से जुड़े सैद्धान्तिक पाठ सम्मिलित हैं। अध्ययन 'साकेत' के नारी-पात्रों तक सीमित है; गुप्त की अन्य कृतियों का उल्लेख केवल तुलनात्मक सन्दर्भ में किया गया है।

5. साहित्य-समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में गुप्त को खड़ी बोली के प्रतिष्ठित कवियों में स्थान दिया और उनकी प्रवृत्ति को राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना से जोड़ा (शुक्ल, 1929)। नगेन्द्र द्वारा सम्पादित इतिहास-ग्रन्थ में भी गुप्त की काव्य-यात्रा और उनके प्रबन्ध-काव्यों की भूमिका का मूल्यांकन मिलता है (नगेन्द्र, 1973)। द्विवेदी (1908) का निबन्ध उर्मिला-विषयक उपेक्षा का प्रस्थान-बिन्दु है। स्त्री-प्रश्न के व्यापक सन्दर्भ में महादेवी वर्मा (1942) ने भारतीय स्त्री की सामाजिक स्थिति पर गम्भीर विचार किया है, जो गुप्त के चित्रण को परखने की एक हिन्दी-साहित्यिक कसौटी प्रदान करता है। चटर्जी (1989) का तर्क है कि औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद ने स्त्री को 'घर' और 'आध्यात्मिक' क्षेत्र का प्रतीक बनाया, जो गुप्त की स्त्री-छवि को समझने में उपयोगी सैद्धान्तिक आधार है।

6. 'साकेत' की पृष्ठभूमि और नारी-दृष्टि

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

'साकेत' बारह सर्गों का प्रबन्ध-काव्य है, जिसकी कथा का आधार वाल्मीकि और तुलसीदास की रामकथा है (वाल्मीकि, n.d.; तुलसीदास, n.d.)। गुप्त ने कथा के ढाँचे को बनाए रखते हुए उसके भावनात्मक बल को बदला है। यहाँ राजसभा के निर्णयों के साथ-साथ अन्तःपुर के संवाद, मौन और पीड़ा को भी काव्य का विषय बनाया गया है। इस परिवर्तन के कारण स्त्री-पात्र केवल घटनाओं के साक्षी नहीं रह जाते, वे कथा की नैतिक संरचना में सक्रिय भागीदार बनते हैं (गुप्त, 1932a)।

7. प्रमुख नारी-पात्रों का चित्रण

नीचे सारणी में 'साकेत' के प्रमुख नारी-पात्रों का संक्षिप्त तुलनात्मक सार प्रस्तुत है।

पात्र	कथा में भूमिका	प्रमुख गुण	गुप्त की विशिष्ट दृष्टि
सीता	राम की सहधर्मिणी; वनवास में सहयात्री	धैर्य, स्वावलंबन, मर्यादा	गृहिणी-शक्ति का आदर्श; वन-जीवन में श्रमशील और आत्मविश्वासी स्त्री
कौशल्या	राम की माता; राजमाता	ममता, संयम, गरिमा	पुत्र-वियोग में भी धैर्य; मातृत्व का गम्भीर रूप
सुमित्रा	लक्ष्मण की माता	त्याग, कर्तव्य-बोध	पुत्र को सेवा-धर्म की ओर प्रेरित करने वाली दृढ़ माता
कैकेयी	भरत की माता; वनवास की निमित्त	आरम्भ में महत्त्वाकांक्षा, बाद में पश्चात्ताप	खलनायिका की परम्परागत छवि का मानवीय पुनर्पाठ
माण्डवी-श्रुतकीर्ति	भरत व शत्रुघ्न की पत्नियाँ	धैर्य, पारिवारिक निष्ठा	राजकुल की स्त्रियों के मौन त्याग की उपस्थिति

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

पात्र	कथा में भूमिका	प्रमुख गुण	गुप्त की विशिष्ट दृष्टि
उर्मिला	लक्ष्मण की पत्नी	प्रेम, त्याग, आत्मबल, विरह-गरिमा	उपेक्षित पात्र को काव्य का भावनात्मक केन्द्र बनाना

7.1 सीता

गुप्त की सीता केवल पतिव्रता आदर्श नहीं, बल्कि वनवास के कठिन जीवन को आत्मविश्वास से अपनाने वाली सहचरी हैं। वन में गृहस्थी का संचालन, श्रम और प्रकृति के साथ सहज सम्बन्ध उनके चरित्र को सक्रियता देता है। मर्यादा और धैर्य उनके व्यक्तित्व के केन्द्र में हैं।

7.2 कौशल्या और सुमित्रा

कौशल्या राजमाता के रूप में पुत्र-वियोग की पीड़ा को संयम और गरिमा के साथ सहती हैं। सुमित्रा का चित्रण त्याग और कर्तव्य-बोध की दृष्टि से विशेष है; वे अपने पुत्र लक्ष्मण को सेवा-धर्म के लिए प्रेरित करती हैं, जिसकी परम्परा वाल्मीकि-रामायण में भी मिलती है (वाल्मीकि, n.d.)। गुप्त के यहाँ माताएँ केवल करुणा की मूर्ति नहीं, बल्कि नैतिक निर्णय की क्षमता रखने वाली स्त्रियाँ हैं।

7.3 कैकेयी

परम्परागत रामकथा में कैकेयी प्रायः खलनायिका के रूप में आती हैं। 'साकेत' में कवि उन्हें पूर्णतः दोषमुक्त नहीं करता, किन्तु उनके पश्चात्ताप और आत्मबोध को स्थान देकर उन्हें मानवीय धरातल पर प्रस्तुत करता है। यह चित्रण गुप्त की उस प्रवृत्ति को दर्शाता है जिसमें पात्र को केवल अच्छे या बुरे के खाँचे में नहीं रखा जाता, बल्कि उसकी परिस्थितियों और मनोभावों के साथ समझने का प्रयास किया जाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

7.4 माण्डवी और श्रुतकीर्ति

भरत और शत्रुघ्न की पत्नियों का स्थान कथा में सीमित है, किन्तु उनकी उपस्थिति यह संकेत देती है कि वनवास की त्रासदी केवल राम-सीता तक सीमित नहीं थी; अयोध्या के पूरे राजकुल की स्त्रियाँ किसी न किसी रूप में उसकी कीमत चुका रही थीं।

8. उर्मिला: विशेष अध्ययन

8.1 परम्परा की उपेक्षा से काव्य के केन्द्र तक

वाल्मीकि और तुलसीदास की रामकथा में उर्मिला का उल्लेख अत्यल्प है, जबकि लक्ष्मण के चौदह वर्ष के वनवास में उनका त्याग किसी से कम नहीं था। द्विवेदी (1908) ने इसी उपेक्षा की ओर ध्यान दिलाया था। गुप्त ने 'साकेत' में उर्मिला को कथा का एक प्रमुख भावनात्मक केन्द्र बना दिया, जिससे वह 'उपेक्षिता' से 'नायिका-तुल्य' पात्र बन जाती हैं (गुप्त, 1932a)।

8.2 दाम्पत्य-प्रेम और त्याग

उर्मिला का प्रेम भावुकता तक सीमित नहीं है। वे लक्ष्मण के कर्तव्य-पथ में बाधा बनना नहीं चाहतीं और अपने दुःख को पीछे रखकर पति को जाने देती हैं। यहाँ त्याग विवशता नहीं, चयन के रूप में उभरता है। इसी कारण उनका चरित्र निष्क्रिय पीड़िता से अधिक आत्म-संयमित और विवेकशील स्त्री का रूप ग्रहण करता है।

8.3 विरह की गरिमा

'साकेत' के नवम सर्ग को उर्मिला के विरह-वर्णन के लिए विशेष रूप से स्मरण किया जाता है। हिन्दी काव्य-परम्परा में विरह प्रायः नायिका की कातरता से जुड़ता है, किन्तु गुप्त ने उर्मिला के विरह को तपस्या जैसी गरिमा दी है। वियोग की पीड़ा के बीच भी उनमें आत्म-नियन्त्रण, प्रतीक्षा का धैर्य और परिजनों के प्रति दायित्व-बोध बना रहता है। यह विरह-वर्णन शृंगारिक रुदन से आगे बढ़कर नैतिक दृढ़ता का प्रतीक बनता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

8.4 प्रकृति और संवेदना

उर्मिला के वियोग-चित्रण में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, उनके मनोभावों की सहचरी है। ऋतुओं, चन्द्रमा और वातावरण के माध्यम से उनकी आन्तरिक अवस्था को व्यंजित किया गया है। इससे चरित्र की भावनात्मक गहराई बढ़ती है और विरह का अनुभव पाठक के लिए अधिक सजीव बनता है।

8.5 वाल्मीकि-तुलसी परम्परा से तुलना

वाल्मीकि और तुलसी की रामकथा में आदर्श स्त्री-छवि मुख्यतः सीता के माध्यम से निर्मित है (वाल्मीकि, n.d.; तुलसीदास, n.d.)। गुप्त ने इस आदर्श-परिधि का विस्तार किया और यह दिखाया कि राजकुल की अन्य स्त्रियों का मौन संघर्ष भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। 'यशोधरा' के साथ पढ़ने पर यह स्पष्ट होता है कि गुप्त बार-बार उन स्त्रियों की ओर लौटते हैं जो महान पुरुषों के कर्तव्य-पथ की कीमत चुकाती हैं (गुप्त, 1932a, 1932b)।

9. नारी-विमर्श की कसौटी पर मूल्यांकन

गुप्त के चित्रण की प्रमुख उपलब्धि यह है कि उन्होंने स्त्री-पात्रों को आन्तरिक जीवन, विवेक और नैतिक बल प्रदान किया। उर्मिला और कैकेयी के पुनर्पाठ इसके सशक्त उदाहरण हैं।

फिर भी, नारीवादी दृष्टि से कुछ प्रश्न उठते हैं। दे बोवुआर (2011) ने स्त्री को पुरुष के सापेक्ष 'दूसरे' के रूप में गढ़े जाने की प्रक्रिया की ओर संकेत किया है; उर्मिला की गरिमा भी प्रायः पति के कर्तव्य के सापेक्ष परिभाषित होती है। चटर्जी (1989) के अनुसार राष्ट्रवादी विमर्श में स्त्री को परम्परा और नैतिकता के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया; 'साकेत' की त्यागमयी, संयमित स्त्री-छवि को इस सन्दर्भ में भी पढ़ा जा सकता है। महादेवी वर्मा (1942) का स्त्री-प्रश्न पर चिन्तन यह स्मरण कराता है कि स्त्री की मुक्ति केवल आदर्शीकरण से नहीं, सामाजिक बराबरी से जुड़ी है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

इसलिए 'साकेत' को एक साथ दो रूपों में पढ़ना उचित है: एक ओर यह उपेक्षित स्त्री-स्वर को स्थान देने वाली महत्त्वपूर्ण पहल है, और दूसरी ओर इसमें त्याग को स्त्री का केन्द्रीय गुण मानने की सीमा भी दिखाई देती है।

10. निष्कर्ष

- 'साकेत' में रामकथा का भावनात्मक केन्द्र अन्तःपुर की स्त्रियों की ओर विस्तृत हुआ है।
- सीता, कौशल्या, सुमित्रा और माण्डवी-श्रुतकीर्ति के चित्रण में धैर्य, त्याग और कर्तव्य-बोध प्रमुख है, जबकि कैकेयी का पश्चात्ताप-युक्त मानवीय चित्रण गुप्त की मौलिकता है।
- उर्मिला गुप्त की सबसे विशिष्ट रचनात्मक उपलब्धि है; उनका प्रेम, विरह और आत्मबल उन्हें उपेक्षित पात्र से काव्य की सशक्त नायिका बनाता है।
- समकालीन नारी-विमर्श की दृष्टि से इस चित्रण में आदर्शीकरण और त्याग-केन्द्रित स्त्री-छवि की सीमाएँ भी हैं, जो आगे के अध्ययन के लिए प्रश्न छोड़ती हैं।

भविष्य के शोध में 'साकेत' के नारी-पात्रों का 'यशोधरा' तथा अन्य आधुनिक रामकथा-काव्यों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ-सूची

गुप्त, मैथिलीशरण. (1932a). साकेत [Saket]. साहित्य सदन, चिरगाँव।

गुप्त, मैथिलीशरण. (1932b). यशोधरा [Yashodhara]. साहित्य सदन, चिरगाँव।

तुलसीदास. (n.d.). रामचरितमानस [Ramcharitmanas]. गीताप्रेस, गोरखपुर. (मूल कृति लगभग 1574)

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

द्विवेदी, महावीर प्रसाद. (1908). कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता [Poets' indifference towards Urmila]. सरस्वती।

नगेन्द्र (सं.). (1973). हिन्दी साहित्य का इतिहास [History of Hindi literature]. मयूर पेपरबैक्स।

वर्मा, महादेवी. (1942). श्रृंखला की कड़ियाँ [Links in the chain]. लोकभारती प्रकाशन।

वाल्मीकि. (n.d.). श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण [Valmiki Ramayana]. गीताप्रेस, गोरखपुर।

शुक्ल, रामचन्द्र. (1929). हिन्दी साहित्य का इतिहास [History of Hindi literature]. नागरी प्रचारिणी सभा।

Chatterjee, P. (1989). The nationalist resolution of the women's question. In K. Sangari & S. Vaid (Eds.), Recasting women: Essays in Indian colonial history (pp. 233-253). Kali for Women.

de Beauvoir, S. (2011). The second sex (C. Borde & S. Malovany-Chevallier, Trans.). Vintage Books. (Original work published 1949)